नीलांबरी

काव्य संग्रह

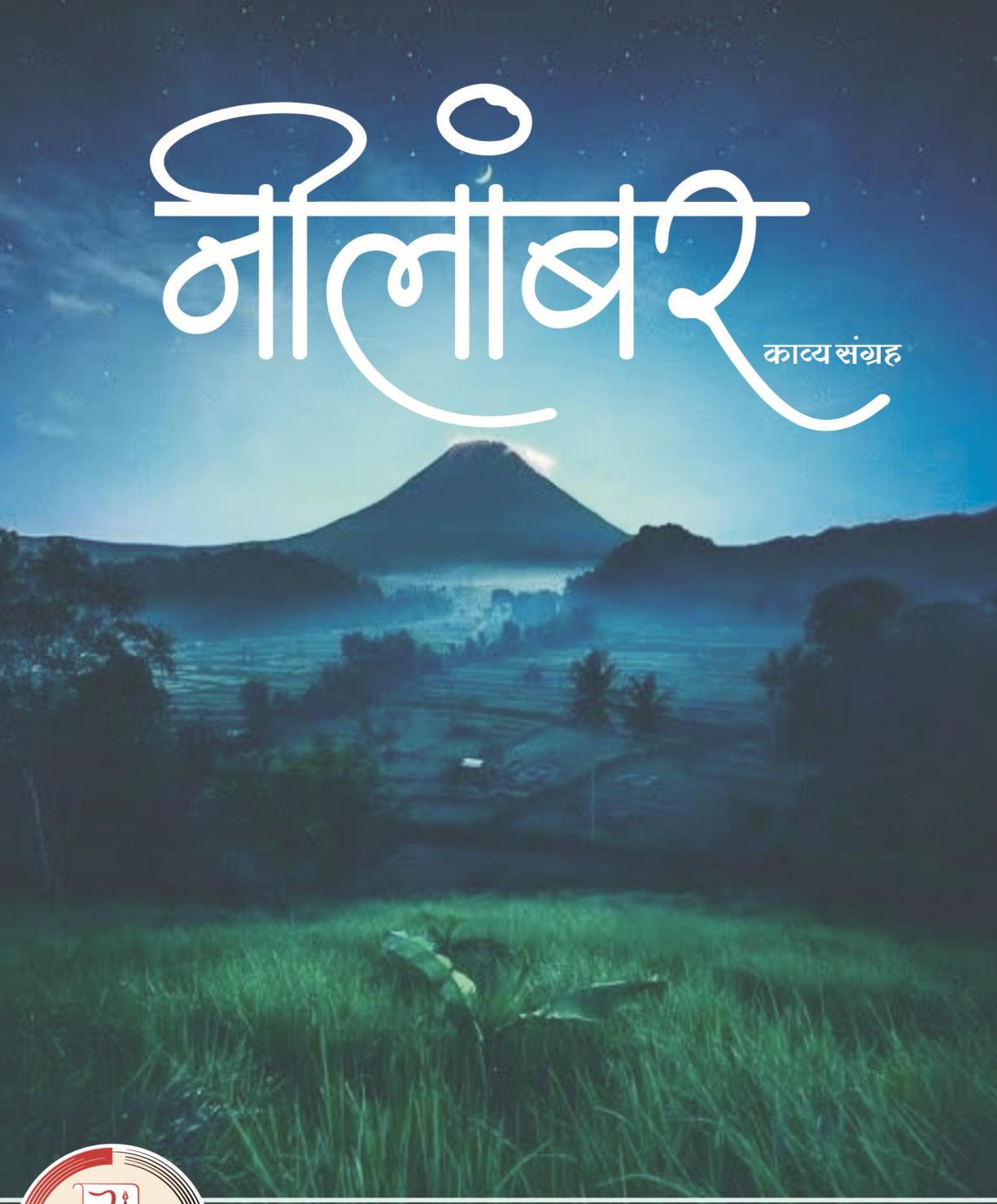

किरण टाटिया

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

नीलांबर

कविता संग्रह

किरण टाटिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-045-2"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **किरण टाटिया**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

NEELAMBAR BY KIRAN TATIYA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

नदी, पेड़, पहाड़ के आसपास झूमती हवाएं और इस बीच आकाश को ताकना मुझे अच्छा लगता रहा है यही खुशी का भाव मेरी कविताओं में है। कभी कुछ ऐसा सोचा नही था कि अपनी रचनाओं का इतना व्यवस्थित संग्रह कर पाऊंगी ।

गुरु कृपा एवं माता पिता के आशीर्वाद से यह संभव हो पाया है । मुझे अभी भी यह स्वपन की भांति ही लग रहा है।

अगला प्रयास **'स्वर्ण किरण'** होगी। मेरे अपनों को मेरा अपना यह कविता संग्रह समर्पित है ।

अनुक्रमणिका

1.	मेरे पापा	7
2.	क्षितिज	8
3.	जीवन स्पंदन	9
4.	उड़ान	10
5.	संवेदना	11
6.	सुख - दुःख	12
7.	अनंत आकाश	13
8.	परीक्षा	14
9.	मुस्कान	15
10.	मौन	16
11.	चंदन के पेड़	17
12.	नींव का पत्थर	18
13.	रचयिता	19
14.	मैं बूंद	20
15.	मैं चंदन हूं	21
16.	नाजुक घास	22
17.	बंदगी	23
18.	आशियां, मकान, घर	24

19.	बहती धारा	25
20.	कोरा कागज	26
21.	चलो मनाएं हम होली	27
22.	तुम समझ पाते	28
23.	तुम्हारे लिए	29
24.	कोहिनूर	30
25.	मैं हूं किरण	31
26.	चलो चांद को छू आये	32

मेरे पापा

कुछ कहा नही पर सब समझा गए
मेरे पापा सब सीखा गए ।
निःस्वार्थ, निःशब्द, बहती नदी
नेह का भीगता सागर
मेरी जरूरतों का आसमान दे गए
मेरे पापा सब सीखा गए...

भेद नही पुत्र-पुत्री का,
शब्दों में डांट नहीं थी
पुस्तकीय शिक्षा, धर्म की दीक्षा
जीवन की समीक्षा
बिना बतलाए, संभला गए
दीपक एक जला गए
मेरे पापा सब सीखा गए...

अतृप्त भूमि का सावन
व्यक्तित्व बनाया हमारा पावन
तुम पतवार, तुम ही नाविक
हमेशा थामे रखा हमारा दामन
हमे बना दिया नन्दनवन
जीवन बहु विधाओं से संवार गये
मेरे पापा सब सीखा गए ....

खुद जलते रहे, खुद तपते रहे
हमें बना दिया कुंदन
सम्मान से आपके चरणों का
वंदन, अभिनंदन, वंदन
सादर समर्पित जीवन चंदन
मेरे पापा सब सीखा गए ....

क्षितिज

पाने चलती मीलों दूर
उतना ही पाती फिर दूर
जीवन के अनंत रहस्य
सांसें जितनी अंदर
उतनी बिखरी बाहर
टूटी आशाएं, बिखरे सपने
पिरोती, बुनती धागों से
कुछ पहनती, कुछ ओढ़ती
रंग संयोजन से संवारती
बिखरे तानों-बानो को सुलझाती
सिलसिला जिंदगी का
कई बार संवारती
पर हार नही मानती
नई सुबह, नई किरण
नए सपने, नए रंग
नई आशा
नए परिधान के साथ
इठलाती, बलखाती
फिर क्षितिज की ओर जाती ।

जीवन स्पंदन

सूखे दरख्त पर
कोंपल फूटी है,
सोए ज़ज्बातों पर
सूर्य किरण ने
आज ली फिर अंगड़ाई है।
फिजा की मस्त बयार
गीत बन फूटी है,
प्रफुल्ल हुआ जीवन स्पंदन
पर परिंदों के फैल उठे हैं,
कलम में रोशनाई लौट आई है ।
छोटी-छोटी खुशियों से
जीवन गीत सजाया है,
फूल छूपा नन्ही कली में
नया बाग महकाया है,
ठण्डी हवा के झोंके से
मन वृक्ष लहलहाया है।
भीतर की अनुभूति
आज होंठों ने गुनगुनाई है,
चंदन की महक ने
अंग-अंग महकाया है ।

उड़ान

डरता नही परिंदा
आसमान की बुलंदियों से
डरता नही परिंदा
अपने छोटे-छोटे पंखों से
परिंदा देखता है
'लक्ष्य'
उड़ान भरता, मस्त गगन में
नापता पर्वत की ऊंचाई
दरख्त- दरख्त से ठिठोली
सैर फूलों की वादियों की
नहाता झरनों में
लेता अंगड़ाई
बहता पवन संग
नहीं भाती उसे तन्हाई
उसके पंखों में उड़ान है
उसका तो अब पूरा जहान हैं ।

'संवेदना'

संवेदना !

एक बार तुम आओ

मेरे हृदय तल में

मानवता के अंकुर जगाओ

बहते वक्त के साथ

पत्थर बन गई मैं

कुछ प्रेम के फूल खिलाओ

संवेदना ! एक बार तुम आओ।

देख पास की प्रगति

धधकती है निरंतर

ईर्ष्या क्रोध की अग्नि

हर रिश्ते में अब दिखता स्वार्थ

बुझा दो मेरी विकलता को

भस्म कर दो मेरे विकार

संवेदना ! एक बार तुम आओ ।

सुख-दुख

जीवन सुख -दुख दो पहल है
है दोनों ही स्वीकार
जीवन का यह सत्य अटल है
नही शेष कोई प्रतिकार

उदित कर्मों का यह लेखा
कल यहाँ किसी ने न देखा
नहीं शिकायत, इर्ष्या, द्वेष
हंसते-हंसते सब पी जाना है।

समता, सहन, क्षमा, धैर्यता
यह सब गुण अपनाना है
लेना-देना सब यही चुकाना
कर्तव्य दायित्व मुझे निभाना है।

अनंत आकाश

मुझे सुहाती है,
आकाश की नीलिमा
मुझे बुलाती है,
आकाश की लालिमा
समा जाते हैं, मेरे भीतर
आकाश के आलिंगन से
अनंत - अनंत रहस्य ।
आलिंगन मुक्त होते ही
मुझे घेरती है,
जड़ता, शून्यता,
एकाकीपन, सन्नाटा,
मेरे बंधे पैर, शून्य आंखें
तब
झकझोरता है कोई मुझे
कानों में धीरे से कहता है,
तूझे चलना है मीलों
आकाश के
आलिंगन के लिए
जहां अनंत शक्तियां
प्रतीक्षारत है,
तेरे लिए
तेरे लिए.....

परीक्षा

जीवन एक परीक्षा
विश्वास, अविश्वास का
झूलता झूला, एक पेण्डूलम।
उलझे-सुलझे सवालों का
प्रश्नपत्र।
किताबी ज्ञान व अनुभव का संगम।
चरामेति-चरामेति का
नाद ।
यात्रा यह अविराम ।
अतीत के ज्ञान की
शिक्षा
वर्तमान को जीने की
भरपुर इच्छा
भविष्य को जानने की
समीक्षा।
जीवन एक परीक्षा ।
बुजुर्गो के अनुभवों की
भिक्षा
स्वयं ग्रहण की जाने वाली
दीक्षा ।
जीवन एक परीक्षा ।

तुम्हारे लिए

आज तुम कुछ कहो ना
मैं शब्द बन जाऊंगी ।
अपने जज्बातों को बिखेरो ना
मैं कविता बन जाऊंगी।
चुप ना रहो
शब्दों को बहने दो
फूलों की खूश्बू लिये
एक गीत बन जाऊंगी।
मुखड़ा तुम बोलो
मैं अंतरा बन जाऊंगी ।
दिल के तारों को तुम छेड़ो
मैं वीणा बन जाऊंगी।
जीवन स्पंदन की सांसें फूंको
मैं बांसुरी बन,
अधरों पर सज जाऊंगी ।
धड़कन-धड़कन मधुरस घोलो
मैं मीठा राग सुनाऊंगी।
जैसा तुम गाओ
वैसा एक संगीत बन जाऊंगी
तुम्हारे लिए।

चंदन के पेड़

बढा कर हिम्मत
प्यास उड़ने की जगाये
बांध विश्वास की डोर
ख्वाबों की पतंग उड़ाये
पा कर छोटी सफलता
छलकाए खुशी के आंसू
हल्के- हल्के मुस्काए
चलो जीवन में कुछ कर जाए
बुलंदियों के आसमां पर
अपने नाम
एक सितारा कर जाएं
एक ध्रुव हम भी बन जाए
पगडंडियों, राहों पर
है, कटीली झाड़ियां
पग-पग साहस से बढ़कर
चलो चंदन के पेड़ उगाए

नींव का पत्थर

चुप ओढ़ कफन

जमीन में दफन

कर्तव्यों का बोध

निष्ठावान प्रहरी

अडिग, अटल हिमालय

ऊंचाइयों का आधार

हिलना मेरा कर्म नहीं

कुछ कहना मेरा धर्म नहीं

कर्तव्य परायण कांधे

हाथ पर हाथ बांधे

भवन भारसाधक

दिखता नही, नही अमर

मैं नींव का पत्थर हूं।

रचयिता

अनंत आकाश, विशाल सागर
अनेक आकाशगंगा - तारामंडल
सूर्य, चांद, तारे भी अनेक
किन्तु हमारी आंखें, देख पाती एक
आदि शक्ति का गजब प्रबंधन
कितना अद्‌भुत है संयोजन
दिन रात का शुद्ध प्रयोजन
सबका अपना गुरुत्वाकर्षण

भिन्न-भिन्न है अस्तित्व
सबकी अपनी दूरी-धूरी है
अदृश्य तुम विस्मयकारी
कैसा खेल रचाते हो
कहीं बैठ कोने में चुपचाप
अपनी अंगुली से सभी को नचाते हो
तभी तो तुम रचयिता कहलाते हो

मै हूँ किरण

दीदी माँ
कान्ति ज्योति
की मै हूँ किरण
यादों के झरोखे मे
झांकता है तुम्हारा
स्नेह, प्यार अपार
तो छलक जाते हैं, आंसू
तुम्हारी बलाओ से
नहीं फटकती बुरी नजर
तुम्हारी यादों से होती
मेरी खूबसूरत फजर
सिमट जाता हर कहर
प्रहरी हो हर प्रहर के
रखती मेरी हर खबर
मार्गदर्शन, अनुसरण
मेरे जीवन मूल्यों का आदर्श
तुम ही तो मेरे प्रादर्श
डर नहीं भीड़ में घूमने का
हौसला देती तुम्हारी अंगुलिया
मेरे साथ है
मेरे माँ, बहन, भाई
मेरे गुरु का अभिन्न साथ है
मै क्यू डरुं हार से
जब ये सब मेरे
गले का हार है।

कोहिनूर

नूर हो, कोहिनूर हो
मेरा तो गुरूर हो
अंधेरी राहों की रोशनी
थके पथिक की उर्जा हो

मेरे मन के आंगन में तुम
खिलती एक फुलवारी हो
नन्हे बच्चे की किलकारी हो
तुम सुख-दुख के संगवारी हो

प्रेम भरी लिखावट
अंतर्मन की सजावट
जोड़ दिल से दिल का तार
बिखरी बिखरी अब हूं सार

कब घेरा तुमने मुझको
या खुद घिर गई तुमसे
मेरे उलझे,अनकहे प्रश्नों के
तुम खुद उत्तर बन जाते हो।

कब हो गये पास पास
तुम हो तो, मै नही उदास
अन्तर्मन मे है तेरा निवास
मेरी आशा के सूर्य, किरण की आस

मैं बूँद

मैं बूंद...
तपती हवा को शीतलता देती
नभ से बिछड़ धरती पर गिरती
सारे जग का प्यास बुझाती
हरियाली बन खिल-खिल जाती

मैं बूंद...
फसल की बाली में भरती
अन्न बन हांडी में पकती
भोजन के थाली में सजती
निवाला बन राहत मै देती

मैं बूंद...
बच्चों के गालों को चूमती
कागज नाव पानी में चलती
नन्हे निश्चल मुस्कान में खिलती
जवां दिलों की धड़कन में पलती

मैं बूंद...
अकेली अकेली दुखिया रोती
दुल्हन खुशी के आंसू रोती
बूंद बूंद मै सागर होती
गुरु सीप संग बनती मोती..

मै चन्दन हूँ

पहचान, नाम, अस्तित्व
इतिहास, वर्तमान, भविष्य
सब कुछ में महकता
मैं चंदन हूं
भुजंग का आलिंगन
वीरप्पन का प्रहार
नहीं मानता मैं हार
मै चंदन हूं
टुकड़े-टुकड़े, घिसा -पीसा
चिता में जला, माथे सजा
नहीं बदलता अपना व्यवहार
मैं चंदन हूं
मेरी फितरत महकना
जो छू ले तो महकाना
खुशबू का दरख़्त हूं,
मैं चंदन हूं

आशियां, मकान, घर

आशियां, मकान, घर

गुजरता जहां जीवन

संगम-रेत, ईट, सीमेंट

संयोजन - रंग, कालीन, सोफा

साधन - टीवी, फ्रिज, एसी

इन सबके बाद..

घर को चाहिए..

उत्सव की धूमधाम

बच्चों की धमाचौकड़ी

अठखेलियां, बदमाशियां, निशानियां

दिल जहां भीगा-भीगा सा

कहीं कुछ रीता-रीता सा

दादी की कहानी, मां की लोरी

नानी के नुस्खे, दीदी एक छोटी

अनमोल रिश्ते, जहां बसते

रिश्ते जहां, परिवार पलता

जहां प्यार, वहीं बनता बसता

आशियां, मकान, घर

नाजुक घास

ओस से भीगी
नरम मुलायम
कोमलता का एहसास
हरी-भरी कालीन
है यह नाजुक घास
जाने कब कब
रौंदी जाती पग-पग
फिर भी
पूजा में चढ़ाई जाती
तोड़ी जाती, चरी जाती
होती नहीं, कभी उदास
बूंदों से जीवन पाकर
उग आती मुस्कुरा कर
करे हरा वसुंधरा
करती बंजर धरा हरी
यह है नाजुक घास

कोरा कागज

कोरा कागज
लिखाकर लाया था,
मै परेशानियां,
उलझनें, बाधायें, लेकिन
मुझे पतंग बनाकर,
उड़ना सिखा दिया।
मेरे दोस्तों ने

अब मै पतंग हू
थमा कर जीवन डोर
गुरु, प्रभु के हाथ
उड़ती हूं, इठलाती, इतराती
छूती बार-बार आसमान को
बादलो के यान पर हो सवार
हो गया अब इन्द्रधनुषी
ये मेरा
कोरा कागज

बंदगी

खूबसूरत है वह पल
आंसू पोंछ, मुस्कान देना
बोझ से झुके कांधे को
एक सहारा दे देना
डूबते का बन, तिनका
है कोई नहीं जिनका
उसके लिए कर दुआ
उसके लिए कर बंदगी
जो कोने में बैठा अकेला है
देख, तेरे दर पर खुद
दौड़ आएगा खुदा
पूछता हुआ
कहां है मेरा प्यारा चेला

तुम समझ पाते

काश.....

तुम समझ पाते, प्यार मेरा

डूबती सांसें, भीगी आंखें

थरथराते होंठ, निःशब्द मौन

काश.....

तुम समझ पाते, प्यार मेरा

दिल बेकल, सांसों में हलचल

सोते उठना, दिल का धड़कना

तिल-तिल मरना, मन का झरना

जार-जार होता तन, घूटता अंर्तमन

काश.....

तुम समझ पाते.....

खुद को संभाला, संवर नही पाती

थामती, फिर लड़खड़ाती

सामने है खुशियां, जी नही पाती

मेरा मौन, मुझ पर भारी

कहनी हैं बातें, बहुत सारी

काश....

तुम समझ पाते.....

चलो मनाएं हम होली

चलो मनाएं हम होली
मन में इंद्रधनुषी रंगोली
भाई बहन संग मै भोली
चलो मनाएं हम होली

मुठ्ठी में हो आसमां
टिके जमीं पर पैर
पंख फैला उड़े हमजोली
चलो मनाएं हम होली

वृक्ष लगाएं,हरियाली बिछाएं
लाएं जीवन, भरे ताजगी
हम सदाबहार हमजोली
चलो मनाएं हम होली

अंधेरी कुटिया मे
सुनहरी किरणें फैलाकर
सूरज को रख दो हमजोली
चलो मनाएं हम होली

रंग अबीर गुलाल उड़ाएं
संग सखा मनमौजी
खिले-खिले से हमजोली
चलो मनाएं हम होली

बहती धारा

मैं नदी की बहती धारा
निरंतर, सहज, अविकल
पूरा करती सफर।
पहाड़ों से उतरती
चट्टानों से टकराती
मैदानों में बहती
बेफिक्र तटों को
सदाबहार करती।
निरंतर जीवन बिखेरती
कभी पारदर्शी, कभी दूधिया
कभी सुप्त गुप्त हो जाती।
फिर साहस बटोरती
खुले आसमां के नीचे
इठलाती, कल-कल
बहती पांव में घूंघरू बांध
अल्हड़ बाला सी इतराती।
धीमें से मुस्काती
तट पर वृक्षों से बतियाती
धीरे से सर्वस्व स्वयं का
गंभीर सागर को लुटाती
अस्तित्वहीन होकर, स्वयं
मैं सागर बन जाती।

मुस्कान

मुस्कान
होंठों के किनारों का
फैलाव मात्र नहीं
मुस्कान
विश्व की सर्वप्रिय भाषा
लोकप्रिय भाव है।
तन से मन तक
मन से तन तक प्रभावी प्रवाह है।
जिसके फैलाव से फैलता है जीवन
उगती है उमंग
तैरता है उत्साह
झरता है आनंद
दुःख में सुख की छांव है,
लंबी यात्रा का मखमली पांव है,
हर जीत का पहला दांव है।
मुस्कान सखा है
मित्रता का फैलाव है
मुस्कान रंग है
प्रेम का कैनवास है।

मौन

अनवरत भावनाओं का
सिलसिला चलना,
केवल शब्दों का ही
थम जाना,
होंठ खामोश है
आंखें बोल रहीं हैं,
शब्द खामोश हैं
भाव भंगिमाएं बोल रही हैं,
तो ये कैसा मौन है ?
काश! मौन मैं ऐसा कर पाती
कहीं कोई आशा-निराशा नही
कहीं कोई क्रिया-प्रतिक्रिया नही
बाहर व भीतर थम जाती
मौन, केवल मौन रहे।
सच्चा मौन शपथ है,
साधना का रथ है,
आत्म साक्षात्कार करने का
सर्वश्रेष्ठ पथ है।

चलो हम चांद को छू आये

एक हाथ तुम्हारा, एक मेरा
सहारा मजबूत बांहों का
हो फूलों का नजारा
कांटे खुद कर लें किनारा
चलो हम चांद को छू आये

एक जुनून तेरा, एक मेरा
थाल में सितारों की हो चमक
जिस पर हक हो हमारा
बुरी नजर खुद कर ले किनारा
चलो हम चांद को छू आये

एक कदम तुम्हारा, एक मेरा
धरती से सागर का सफर
तृप्त मन हो सहारा
निराशा खुद कर लें किनारा
चलो हम चांद को छू आये

एक पंख तुम्हारा, एक पंख मेरा
बुलंदियां हो आसमां की
प्यार की रस्में हो सहारा
दुश्मन खुद कर लें किनारा
चलो हम चांद को छू आये

एक शब्द तुम्हारा, एक मेरा
गीत हम बन जायें
साथ मिलकर गुनगुनायें
गम खुद कर लें किनारा
चलो हम चांद को छू आये।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **किरण टाटिया**
पति - श्री नीलेश टाटिया
जन्मदिन - १८ जून १९७१, जगदलपुर
मोबाइल - ९४२४११६०८५, ८७७०४७९४७७
ई मेल - kirantatiya1972@gmail-com
शिक्षा - कला स्नातक, हिंदी साहित्य व अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर
विधा - गद्य एवं पद्य मे लेखन व प्रकाशन ।
सम्मान - भाषण एवं वाद विवाद प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत। नाटक लेखन, मंचन व अभिनय, मंच संचालन, रंगोली एवं चित्रकला मे पुरस्कृत।
संपादन - राज्य स्तरीय पत्रिका 'अविरल' का संपादन ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-045-2
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध